E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(4): 149-152
Received: 06-11-2021
Accepted: 16-11-2021

अमरनाथ
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लाँग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ0 छाया श्रीवास्तव
प्राचार्य, श्री रामाकृष्णा कालेज ऑफ एजुकेशन, सतना, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
अमरनाथ
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लाँग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

फतेहपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर भौतिक संसाधन की उपलब्धता का अध्ययन

अमरनाथ एवं डॉ0 छाया श्रीवास्तव

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर भौतिक संसाधन की उपलब्धता का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में चयनित फतेहपुर जिले के प्रत्येक विकासखण्ड से 4–4 प्रारंभिक विद्यालय कुल 52 विद्यालयों, प्रत्येक विद्यालय से प्रधानाध्यापक, 2–2 शिक्षक कुल 104 शिक्षक, अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र व 10 छात्राएं कुल 1040 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया किया गया है। शोध क्षेत्र के प्रधानाध्यापक, शिक्षक, अभिभावक व छात्रों के अभिमतानुसार प्रारंभिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की स्थिति संतोषजनक नहीं है। शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों के भौतिक संसाधनों की उपलब्धता में कोई सार्थक अन्तर नही है।

मुख्यशब्दः फतेहपुर जिला, प्रारंभिक शिक्षा स्तर, भौतिक संसाधन

1. प्रस्तावना
किसी भी देश की प्रगति वहाँ के जनसाधारण की शिक्षा पर निर्भर करती है। साधारणतया किसी देश के विकास में शिक्षा के अतिरिक्त अन्य कई कारण भी उसकी उन्नति में अपना योगदान देते है। फिर भी यदि देश का प्रत्येक नागरिक शिक्षित होगा, तो वह देश के प्रति अपने अधिकारो और कर्तव्यों के प्रति पूर्णतया सजग होगा।

आज विश्व के सभी देशों में प्रारंभिक शिक्षा को जन जन को सुलभ बनाने के लिए सार्थक प्रयास किये जा रहे है। यही कारण है कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर जितने बालक – बालिकाएँ अध्ययन हेतु विद्यालय में सुलभ होते है, उतना अन्य किसी स्तर पर नहीं। इसलिए प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों की संख्या माध्यमिक एवं उच्च शिक्षण संस्थाओं की तुलना में बहुत अधिक हैं। आज भी बहुत से अविकसित एवं विकासशील राष्ट्रों के अधिकांश बालक–बालिकाएँ मात्र प्रारंभिक स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् जीवन के मुख्य धारा से जुड जाते है।

भौतिक संसाधनों के प्रबंधन में विद्यालय भवन, पुस्तकालय, प्रयोगषाला, शिक्षण अधिगम सामग्री, खेल का मैदान, कार्यालय, विद्यालय परिसर, फर्नीचर तथा खेल सामग्री आदि साम्मिलित किए जाते है। भौतिक संसाधनों के अभाव में विद्यालय में उपलब्ध मानवीय संसाधनों का उपयोग भी ठीक ढंग से नहीं किया जा सकता। इसीलिए आवश्यक है कि विद्यालय की भौतिक संसाधनों का अनुरक्षण हो क्योंकि इनके अभाव में न तो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाया जा सकता है और न ही पाठ्यक्रम सहगामी प्रक्रियाओं के माध्यम से बालकों को अंतर्निहित प्रतिभाओं का विकास किया जा सकता है।

विद्यालय में भौतिक संसाधनों के प्रबंधन के अन्तर्गत विद्यालय का फर्नीचर भी आता है विद्यालय में उपर्युक्त फर्नीचर होता है, जिससे छात्र सुविधापूर्वक अध्ययन कर सके। प्राथमिक विद्यालयों में बालकों के बैठनें के लिए टाट–पटटी का प्रयोग किया जाता है परन्तु वर्तमान समय में अधिकर विद्यालयों में कुर्सी या डेस्क का प्रयोग किया जाता है। इस संबंध में उनकी सुविधा पूर्व रखरखाव तथा गुणवत्ता पर ध्यान देना परम आवश्यक है। छात्र संख्या के अनुसार बैठक व्यवस्था का प्रबंधन होना चाहिए।

शिक्षण में श्यामपट का विशेष महत्व है। कक्षा में शिक्षण करते समय अध्यापक को इसकी आवश्यकता होती है। आज के बैज्ञानिक युग में प्रत्येक विद्यालय में विज्ञान प्रशिक्षण से संबंधित सामग्री होनी चाहिए। विज्ञान सामग्री उपलब्ध कराने के लिए विज्ञान विभाग द्वारा विज्ञान किट प्रदान किए जाते है जिनको अच्छी तरह से रखा जाना चाहिए। शिक्षण सामग्री अन्तर्गत मानचित्र, ग्लोब, चार्ट आदि। इसी प्रकार खेल उपकरण अन्तर्गत विजडम ब्लॉक, पक्षी तथा पहेली, तराजू तथा बांट, आवर्धक लेंस, चुंबक, कूदने की रस्सी, बोल, फुटबॉल, रिंग आदि।

विद्यालय को अत्यन्त आकर्षक व सुंदर बनाने के लिए अर्थात साज–सज्जा के लिए विद्यालय के प्रांगण का अत्यधिक सुन्दर होना चाहिए।

इस हेतु विद्यालय पेड़, पौधे, बागवानी तथा वृक्षारोपड़ होना आवश्यक है। विद्यालय में पौधे विद्यालय के वातावरण को प्रदूषण से मुक्त करते हैं साथ ही उसकी सुन्दरता एवं आकर्षण को बढ़ाते है।

एक विकसित विद्यालय की यह विशेषता होती है जहाँ बालक का सम्पूर्ण विकास हो सके, बौद्धिक, सामाजिक, मानसिक, शारीरिक आदि। इन सब के लिए आवश्यक होता है कि बालक पढ़ाई के साथ–साथ शारीरिक क्रियाएँ भी करे। इसके लिए आवश्यक है एक शारीरिक क्रिया योग्य खेल मैदान। जो सभी स्कूलो में होना आवश्यक होता है।

2. अध्ययन की आवश्यकता :

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल फतेहपुर जिले वरन् सम्पूर्ण उत्तरप्रदेश के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर भौतिक संसाधनों की उपलब्धता का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर भौतिक संसाधनों की उपलब्धता को और अधिक प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है।

3. उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया हैः–

1. शोध क्षेत्र में प्रारंभिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की स्थिति का अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों के भौतिक संसाधनों की उपलब्धता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनायें :

परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पनाा से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार है, जो किसी सामान्य के संबंध में बना लिया जाता है और जिसकी सार्थकता की परीक्षा के लिए आवश्यक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–

1. शोध क्षेत्र में प्रारंभिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की स्थिति संतोषजनक है।
2. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों के भौतिक संसाधनों की उपलब्धता में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5. शोध समस्या का सीमांकन :

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला फतेहपुर है। इसके अन्तर्गत 13 विकासखण्ड–असोधर, बहुआ, भिटौरा, हसवा, तेलियानी, अमौली, देवमई, खजुहा, मलवां, एरायां, धाता, हथगाम व विजयीपुर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर संचालित एकीकृत शिक्षा योजना के क्रियान्वयन का समीक्षात्मक अध्ययन सम्मिलित किए गए है।

6. शोध विधियाँ :

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। शोध अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधि : प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 अवलोकन विधि : शोध अध्ययन के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की वर्तमान स्थिति का पता लगाने हेतु न्यादर्श के रूप में चयनित प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों का अवलोकन किया गया है।

6.3 साक्षात्कार विधि : शोध क्षेत्र फतेहपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर संचालित एकीकृत शिक्षा योजना के क्रियान्वयन की वर्तमान स्थिति की ज्ञात करने के लिए इस क्षेत्र में संलग्न शिक्षक, प्रधानाध्यापक तथा अभिभावकों से उनकी अभिवृत्तियों व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

6.4 सांख्यिकी विधि : प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन :

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित फतेहपुर जिले के प्रत्येक विकासखण्ड से 4–4 प्रारंभिक विद्यालय कुल 52 विद्यालयों, प्रत्येक विद्यालय से प्रधानाध्यापक, 2–2 शिक्षक कुल 104 शिक्षक, अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र व 10 छात्राएं कुल 1040 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया किया गया है। न्यादर्श का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण :

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – कौल, लोकेश (1998)[1], प्रकाश, तीर्थ व सिंह संतोष कुमार (2007)[2], पंत, नवीन (2007)[3], पाठक, पी.डी. (1998)[4], दुबे, भावेश चन्द्र (2005)[5], दीक्षित, अक्षय कुमार (2005)[6], सिंह एस.के. एवं सिंह, शीला (2006)[7], त्रिपाठी रेणु एवं त्रिपाठी, अर्पणा (2007)[8], तिवारी, अजय प्रकाश (2016)[9]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय :

फतेहपुर जनपद निचले गंगा–यमुना दोआब में स्थित इलाहाबाद मण्डल का पश्चिमी जनपद है, जिसका विस्तार 25°26′ उत्तरी अक्षांश से लेकर 26°16′ उत्तरी अक्षांश एवं 80°14′ पूर्वी देशांतर से 81°20′ पूर्वी देशांतर के मध्य आयताकार रूप में हैं। यह उत्तर

में गंगा नदी औद दक्षिण में यमुना नदी द्वारा सीमांकित है। इसकी पूरब–पश्चिम अधिकतम् लम्बाई 230 कि.मी. और उत्तर–दक्षिण चौड़ाई 95 कि.मी. है। इसके उत्तर में उन्नाव, रायबरेली व उत्तरपूर्व में प्रतापगढ़, पूर्व में इलाहाबाद, दक्षिण में यमुना नदी के पार हमीरपुर व बादा तथा पश्चिम में कानपुर जनपद स्थित है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्रमांक – 1: शोध क्षेत्र में प्रारंभिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की स्थिति संतोषजनक है।

सारणी क्रमांक 1: शोध क्षेत्र में प्रारंभिक शिक्षा स्तर के भौतिक संसाधनों की उपलब्धता नहीं है का अध्ययन

क्र.	विकासखण्डों के नाम	न्यादर्श में चयनित							
		प्रधानाध्यापक (प्रत्येक विकासखण्ड से 04 अर्थात कुल 52)		शिक्षक (प्रत्येक विकासखण्ड से 08 अर्थात कुल 104)		अभिभावक (प्रत्येक विकासखण्ड से 08 अर्थात कुल 104)		छात्र (प्रत्येक विकासखण्ड से 80 अर्थात कुल 1040)	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	असोधर	03	75.00	05	62.50	04	62.50	58	72.50
2.	बहुआ	03	75.00	05	62.50	06	70.00	54	67.50
3.	भिटौरा	03	75.00	07	87.50	06	70.00	58	72.50
4.	हसवा	03	75.00	07	87.50	06	70.00	64	80.00
5.	तेलियानी	04	100.00	05	62.50	05	62.50	51	63.75
6.	अमौली	03	75.00	07	87.50	05	62.50	60	75.00
7.	देवमई	04	100.00	06	70.00	06	70.00	54	67.50
8.	खजुहा	03	75.00	05	62.50	06	70.00	58	72.50
9.	मलवां	04	100.00	05	62.50	05	62.50	54	67.50
10.	एरायां	03	75.00	06	70.00	04	50.00	60	75.00
11.	धाता	03	75.00	05	62.50	06	70.00	56	67.50
12.	हथगाम	03	75.00	06	70.00	05	62.50	60	75.00
13.	विजयीपुर	03	75.00	07	87.50	04	62.50	51	63.75
योग		42	80.77	76	73.08	68	65.38	738	70.96

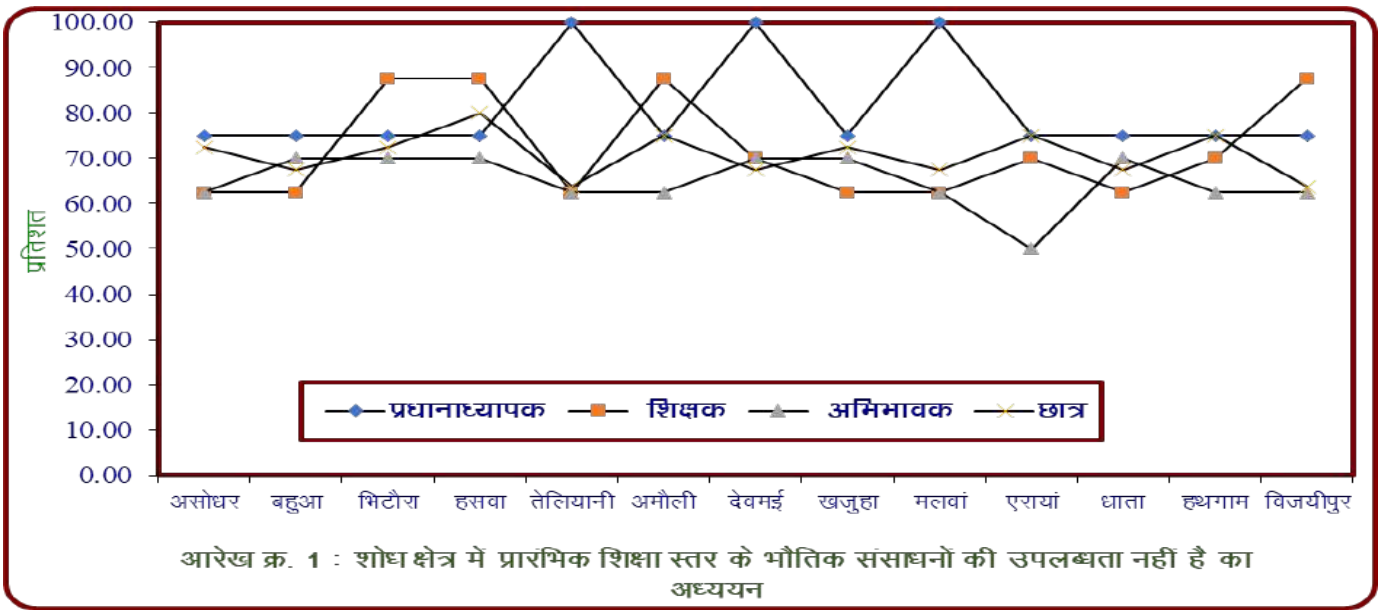

आरेख क्र. 1 : शोध क्षेत्र में प्रारंभिक शिक्षा स्तर के भौतिक संसाधनों की उपलब्धता नहीं है का अध्ययन

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 में शोध क्षेत्र के प्राथमिक स्तर के न्यादर्श में चयनित 04–04 विद्यालयों के प्रधानाध्यापको, शिक्षकों, अभिभावकों व छात्रों से प्रारंभिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता से सम्बंधी जानकारियों का संकलन किया गया है।

शोध क्षेत्र के तेलियानी, देवमई व मलवां विकासखण्ड में शत–प्रतिशत और शेष सभी विकासखण्डों में 75.00 प्रतिशत प्रधानाध्यापकों ने माना है कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की स्थिति संतोषजनक नहीं है। 80.77 प्रतिशत प्रधानाध्यापकों के

अभिमतानुसार प्रारंभिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की स्थिति संतोषजनक नहीं है।
शोध क्षेत्र में भिटौरा, हसवा, अमौली व विजयपुर में 87.50 प्रतिशत, देवमई, एरायां व हथगाम विकासखण्ड में 70.00 और शेष सभी विकासखण्डों में 62.50 प्रतिशत शिक्षक यह मानते हैं, कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की स्थिति संतोषजनक नहीं है। 73.08 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार प्रारंभिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की स्थिति संतोषजनक नहीं है।
शोध क्षेत्र के बहुआ, भिटौरा, हसवा, देवमई, खजुहा व धाता विकासखण्ड में 70.00 प्रतिषत, एरायां विकासखण्ड में 50.00 प्रतिशत व शेष सभी विकासखण्डों में 62.50 प्रतिशत अभिभावक के कथनानुसार शोध क्षेत्र में प्रारंभिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की स्थिति संतोषजनक नहीं है। 65.38 प्रतिशत अभिभावकों के मतानुसार शोध क्षेत्र में प्रारंभिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की स्थिति संतोषजनक नहीं है।
शोध क्षेत्र के सबसे अधिक हसवा विकासखण्ड में 80.00 प्रतिशत और सबसे कम तेलियानी और विजयीपुर विकासखण्ड में 63.50 प्रतिशत छात्र यह मानते हैं, कि प्रारंभिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की स्थिति संतोषजनक नहीं है। 70.96 प्रतिशत छात्रों के मतानुसार प्रारंभिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की स्थिति संतोषजनक नहीं है।
अतः उपरोक्त प्रधानाध्यापक, शिक्षक, अभिभावक व छात्रों के अभिमतानुसार प्रारंभिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की स्थिति संतोषजनक नहीं है। अतः परिकल्पना क्र. 1 निरसित होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 2 शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों के भौतिक संसाधनों की उपलब्धता में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी क्रमांक 2: शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों के भौतिक संसाधनों की उपलब्धता का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		ग्रामीण	शहरी
समूह की संख्या (N)		26	26
मध्यमान (M)		53.85	62.69
मानक विचलन (SD)		15.77	16.25
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		−1.99	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

df = (26-1) + (26-1) = 25+25 =50

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित ग्रामीण विद्यालयों के भौतिक संसाधनों की उपलब्धता से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि ग्रामीण विद्यालयों के भौतिक संसाधनों की उपलब्धता में में सार्थकता का औसत उपलब्धि 53.85 है तथा मानक विचलन 15.77 है।
उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 में न्यादर्श में चयनित शहरी विद्यालयों के भौतिक संसाधनों की उपलब्ध के सम्बन्ध में प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। उपरोक्त सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शहरी विद्यालयों के भौतिक संसाधनों की उपलब्धता में सार्थकता का औसत उपलब्धि 62.69 है तथा मानक विचलन 16.25 है।
50 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान −1.99है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों के भौतिक संसाधनों की उपलब्धता में कोई सार्थक अन्तर नही है। अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शोध क्षेत्र के प्रधानाध्यापक, शिक्षक, अभिभावक व छात्रों के अभिमतानुसार प्रारंभिक शिक्षा स्तर के अधिकांश विद्यालयों में भौतिक संसाधनों की उपलब्धता की स्थिति संतोषजनक नहीं है। शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यालयों के भौतिक संसाधनों की उपलब्धता में कोई सार्थक अन्तर नही है।

संदर्भ

1. कौल, लोकेश (1998): शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि. नई दिल्ली.
2. प्रकाश, तीर्थ व सिंह संतोष कुमार (2007) : प्राथमिक शिक्षा बुनियादी आवश्यकता, 'कुरूक्षेत्र' मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली, वर्ष 53, अंक 11 पृ0– 4–6.
3. पंत, नवीन (2007) : ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के बढ़ते कदम, 'कुरूक्षेत्र,' मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली वर्ष 53, अंक–11, पृ0 32–34.
4. पाठक, पी.डी. (1998) : भारतीय षिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
5. दुबे, भावेश चन्द्र (2005) : प्राथमिक सतरः आन्तरिक एवं बाह्य अनुभवात्मक शिक्षा प्रक्रिया, प्राथमिक शिक्षक' N.C.E.R.T. की त्रैमासिक पत्रिका, वर्ष 30, अंक +2, पृ. 68–73.
6. दीक्षित, अक्षय कुमार (2005) : बच्चों को अभिव्यक्ति की आजादी दें, प्राथमिक शिक्षक' N.C.E.R.T. की त्रैमासिक पत्रिका, वर्ष 30, अंक +2, पृ. 77–80.
7. सिंह एस.के. एवं सिंह, शीला (2006) : बच्चे और विद्यालय, Anwenshika: Journal of Teacher education, vol-3, No-2, pp-99-103.
8. त्रिपाठी रेणु एवं त्रिपाठी, अर्पणा (2007) : भारत में प्राथमिक शिक्षा, प्रथम संस्करण, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली.
9. तिवारी, अजय प्रकाश (2016) : प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर विकेन्द्रीकृत प्रबंधन प्रणाली में ग्राम शिक्षा समिति के सदस्यों, अध्यापकों तथा शिक्षा अधिकारियों में सामंजस्य की स्थिति का अध्ययन, अक्टूबर 2015– जनवरी 2016 (संयुक्तांक) 79.92